बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.:126/2025) Year: 7th

जिला: बाँदा | **मार्च 16-31, जारी करने की तिथि: 15.03.2025**

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ खड़ी फसलों में मृदा जल एवं खरपतवार प्रबंधन करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु हेतु टमाटरए बैगन व मिर्च की रोपाई करें। ➢ प्याज व लहसुन फसलों में नमी प्रबंधन करें। ➢ भिंडीए चौलाईए कुल्फ़ाए लौकीए कद्दूए तरोईए खीराए करेलाए लोबिया की बुआई कर दें। ➢ मिर्चए टमाटरए मिर्चए लहसुनए गोभी वर्गीय सब्जियों में माहू आने की संभावना है अतः उपयुक्त कीटनाशी से पादप सुरक्षा करें। ➢ ग्रीष्म ऋतु की नव रोपित फसलों में मृदा नमी संरक्षणहेतु सूखी घास या पुआल का पलवार प्रयोग करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	***शस्य-प्रबंधन*** ➢ परिपक्व सरसों, मसूर, मटर, चना आदि की फसल को काटकर सुरक्षित स्थान पर रखें ताकि ख़राब मौसम में नुक्सान से बचाया जा सके. काटे गए फसलों की ससमय थ्रेशिंग कर सुरक्षित भण्डारण कर लें। ➢ खेत खाली होने की दशा में मुंग एवं उरद की बोआई का कार्य शुरू करदें! बोआई के समय १८ किग्रा नत्रजन व ४५ किग्रा फॉस्फोरस की मात्रा का प्रयोग प्रति हेक्टेयर की दर से करें। इसके लिए लगभग ४० किग्रा डी० ए० पि० प्रति एकड़ की दर से खेत में देना चाहिए। ➢ बोआई से पहले बीजों को राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना लाभदायक रहता है । १ किग्रा बीज के लिए ४-६ मिली तरल राईजोबियम के घोल के साथ मिलाकर उपचारित करें। उपचार के बाद बीजों को ३० मिनट तक छाया में सुखाकर बोआई शुरू करें । ***मृदा-प्रबंधन*** ➢ उद्यानिक फल वृक्षों में आवष्यकतानुसार सिंचाई उपरान्त पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ जो सब्जी फसलें अभी भी खेतों में है उनमें आवष्यकतानुसार पोषक तत्वों का प्रयोग करें। ➢ ग्रीष्मकालीन सब्जी फसलों की बुवाई/रोपाई में फास्फोरस एवं पोटाष का प्रयोग आधारीय उर्वरक के रूप में प्रयोग करें। एक तिहाई नत्रजन का भी प्रयोग करना उपयुक्त होगा। ➢ जायद मूंग एवं अन्य फसलों की बुवाई हेतु कृषि आदानों की व्यवस्था पूर्व में करना उचित होगा।

		➢ जिन खेतो से फसल कट गई है उन खेतो से मिट्टी परीक्षण हेतु मृदा नमूना एकत्र कर नजदीकी प्रयोगषाला में परीक्षण हेतु भेजें।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ इस माह में मौसम में बदलाव की वजह से होने वाले रोगों इत्यादि का बचाव करने के साथ ही साबधानियाँ भी बरतेंगे। ➢ मच्छर व बाह्य परजीवी कीटों का प्रकोप इस मौसम में अधिक होता हे जिस कारण कारण परजीवियों द्वारा फैलने वाली कई बीमारियां व रोग पशुओं को घेर सकते हैं इस मौसम में इनका बचाव अति आवश्यक हे। पशुचिकित्सक की सलाह के अनुसार उपयुक्त दवाई का छिड़काव नियमित रूप से करें। ➢ पशुओं को संक्रामक रोगों के रोगरोधी टीके समय समय पर अवश्य लगवाएं। ➢ रबी का मौसम में बोई गयी बरसीम, जई, अल्फा अल्फा इत्यादि चारे की फसलों में 10–12 दिन के अंतर पर नियमित सिचायी करें । ➢ ग्रीष्म ऋतू में हरा चारा लेने के लिए ज्वार, मक्का व बाजरा की बुआई भी करें। हरे चारे की फसल से अधिक उत्पादन लेने के लिए उन्नत किस्म के बीज का प्रयोग करें। ➢ ब्याने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाव हेतु व उनमे रोग प्रतिरोधक छमता बढ़ाने के लिए 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण प्रतिदिन दें।
4–	**कीट-प्रबंधन**	➢ सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए व क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत की 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 8–10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीटों के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ आम में मिली बग कीट व भुनगा कीट के नियंत्रण हेतु अथवा फ्लोनीकॉमिड 50 डब्ल्यू जी 4 ग्राम को 10 लीटर अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।

5-	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ मार्च माह में तापमान बढ़ने और आर्द्रता में उतार-चढ़ाव के कारण फसलों में रोगों का खतरा बढ़ जाता है। इस समय फसलों में फफूंदी, जीवाणु एवं वायरस जनित रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। किसानों को समय रहते इनका प्रबंधन करना आवश्यक है। ➢ गेहूं **(Wheat):** ➢ पत्ती झुलसा **(Leaf Blight):** पत्तियों पर भूरे या काले धब्बे दिखाई देना इस रोग का संकेत है। इसके नियंत्रण के लिए, 0.1% कार्बेन्डाजिम या 0.25% मैनकोज़ेब का छिड़काव करें। ➢ पीला रतुआ **(Yellow Rust):** पत्तियों पर पीली धारियां बनती हैं, जिससे फसल कमजोर हो जाती है। रोग के लक्षण दिखने पर 0.1% टेबुकोनाज़ोल या 0.25% प्रोपिकोनाज़ोल का छिड़काव करें। ➢ सरसों **(Mustard) और** चना **(Chickpea)** फसलों की नियमित निगरानी करें और रोग के प्रारंभिक लक्षणों पर तुरंत कार्रवाई करें। ➢ फसल अवशेषों को नष्ट करें तथा कटाई उपरांत गहरी जुताई करें ताकि रोग के कारक नष्ट हो सकें। ➢ फसलों में संतुलित उर्वरक का उपयोग करें और अधिक नाइट्रोजन का प्रयोग न करें, क्योंकि यह रोगों को बढ़ावा दे सकता है। ➢ फसल चक्र अपनाएं और एक ही फसल को लगातार न उगाएं। ➢ समय पर सही प्रबंधन अपनाकर किसान अपनी फसलों को रोगमुक्त रख सकते हैं।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	➢ इस माह किसान भाइयों को गर्मी से पौधों की सुरक्षा तथा सिंचाई नालियों की मरम्मत कर लेना चाहिए। ➢ इस महीने में गर्मी की बढ़ोतरी के कारण पेड़ों को डबल रिंग पद्धति से 7 से 10 दिनों के अंतराल में सिंचाईं करें। ➢ फलदार पौधों के थालों में घास फूस या भूसे का पलवार के रूप में प्रयोग करें जिससे कि वाष्पोत्सर्जन के द्वारा होने वाले पानी के झरण को रोका जा सके। ➢ आम में भुनगा कीट से बचाव हेतु प्रोफेनोफॉस 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घुलनशील गंधक 2.0 ग्राम अथवा डाइनोकैप 1.0 मि.ली. की दर से पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ काला सड़न या आन्तरिक सड़न के नियंत्रण के लिए बोरैक्स 10 ग्राम 1 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें.।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ मार्च माह में वानिकी पौधशाला में पौधारोपण सत्र की मांग की आपूर्ति करने के लिए कार्य योजना जैसे पौधशाला में अंकुरण बेड और पॉलीबाग भरने के लिया ग्रोइंग मीडिया इत्यादि तैयार करें। ➢ अंकुरण हेतु अंकुरण बेड (1 मीटर चौड़ा और 10 मीटर लंबा) तैयार करें। ➢ पॉलीबैग भरने हेतु ग्रोइंग मीडिया बनाने के लिए छनी मिट्टी तथा सड़ी हुई गोबर की खाद का 2 : 1 के अनुपात में मिश्रण बनायें। ➢ पौधशाला में पुरानी पौध का स्थानांतरण सावधानी के साथ सायंकाल में करें और मिट्टी से जुड़ी जड़ों को तेज धार वाले औजार से काटें। स्थानांतरण पश्चात् पौधों की सिंचाई करें। ➢ वानिकी पौधशाला को खरपतवार और रोग मुक्त रखें। ➢ कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की आवश्कतानुसार सिंचाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ दिनेश गुप्ता
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ जगन्नाथ पाठक
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ धर्मेन्द्र कुमार
6. डॉ मयंक दुबे	